

गुरु आमार जाति

गुरु आमार गोत्र

डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली

मूल्य—एक रुपया



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi
Icreator of
hinduism
server!

गुरु मोरो जीवन प्राण जड़ी

- क्या मैं अपने जीवन में “ब्रह्म” से साक्षात्कार कर सकता हूं ?

- गुरु कोई व्यक्ति नहीं, कोई हाड़-मांस का पुतला नहीं, वह तो प्राणों का नर्तन है, हृदय की धड़कन और जीवन का श्वास है।
- पर जब तुम सामान्य मानव बन कर उसे देखते हो, तो वह तुम्हें सामान्य मनुष्य ही दिखाई देगा, पर जिस दिन तुम इस तुच्छता से ऊपर उठ जाओगे, जिस दिन हाड़-मांस, थूक-लार से निर्मित अपनी काया से ऊपर उठ कर देखने का प्रयत्न करोगे, तब तुम्हें गुरु का वास्तविक स्वरूप दिखाई देगा, तब तुम्हें गुरु की ऊँचाई का बोध होगा, तब तुम्हें गुरु में अन्तर्निहित परब्रह्म के साक्षात् दर्शन हो सकेंगे ।
- क्योंकि वह कबीर के शब्दों में “गोविन्द” से भी बढ़ कर है, “गुरु गोविन्द दोऊ खड़े किसके लागूं पाय”, और इसीलिए परमात्मा तक पहुंचने का रास्ता गुरु के पास से ही होकर गुजरता है, बिना गुरु के तुम गोविन्द को पा ही नहीं सकते, तुम “ईश्वर” को “ब्रह्म” को पहिचान ही नहीं सकते, क्योंकि वह तो गुरु के रूप में तुम्हारे सामने खड़ा है, जब तुम उसे ही नहीं पहिचान सकोगे, तो फिर ब्रह्म को कैसे पहिचान सकोगे, फिर तो तुम्हारी ब्रह्म तक की यात्रा भूठी है, व्यर्थ है, बेमानी है ।
- गुरु तो हृदय में बहते हुए ब्रह्म की मद भरी धारा है, जिसमें स्नान करके पवित्र होना है, वह तो आनन्द का सरोवर है, जिसमें डूबने से तृप्ति है, आनन्द है, मस्ती है, वह तो जीवन का मूल है, प्राणों को चैतन्य करने की जड़ी है ।
- इसीलिए तो साकार गुरु के चरणों में समर्पण ही पूर्णता को प्राप्त करना है, और यह समर्पण ही ‘ब्रह्म’ से साक्षात्कार है, उसमें पूर्ण रूप से विसर्जन है ।

— ● —

(२)

दरस बिन दूखण लागे नैन

- जब से आपमें निहित ‘ब्रह्म’ की झलक देखी है, तब से ये आंखें पुनः उसी झलक को देखने के लिए बेताब हैं, व्याकुल हैं, कुछ उपाय बताइये न, गुरुदेव ! मैं क्या करूँ ?

- तुम आधे जग रहे हो, तो आधी बेहोशी में भी हो, तुम्हें पता ही नहीं है कि तुम किधर जा रहे हो, तुम्हारा लक्ष्य क्या है तुम किसे खोज रहे हो ?
- पर तुम्हारी आंखों ने सदगुरु के माध्यम से ईश्वर की एक भलक देख ली है, देख ली है और वह ज्योत्स्नित हो उठी है, चमक उठी है, आनन्द, उमंग और उछाह से भर उठी है ।
- पर फिर तुम्हारे मन का सन्देह तुम्हारी आंखों के सामने आ गया है, फिर तुम्हारे मन का छल आंखों के सामने फन फैला कर सर्प की तरह खड़ा हो गया है, कि यह हाड़-मांस से निर्मित गुरु है भी या नहीं, और इस सन्देह ने तुम्हारी आंखों पर “गान्धारी” की तरह पट्टी बांध दी है ।
- पर उसने तो एक बार उस भलक को देखा है, आंखों ने तो एक बार इस हाड़-मांस के शरीर के भीतर स्थित उस ज्योति को अनुभव किया है, उसने तो उस आनन्द की लपक में अपने सम्बन्धों को परखा है ।
- और अब, जब उन आंखों के सामने सन्देह के बादल घिर आये हैं तो वह सदगुरु की भलक भी बादलों की ओट में लुप्त हो गई है, और आंखें बेचैन हो गई हैं, उनमें मोती की तरह बड़ी-बड़ी बूँदें लुढ़कने लगी हैं, उस दृश्य को पुनः देखने के लिए तरस गयी है, उस घड़ी की बाट जोहते-जोहते दुखने लगी हैं, छटपटाने लगी हैं, व्याकुल, बेचैन और व्यथित होने लगी हैं ।
- और बेताब है तुम्हारी ये आंखें, उन संदेह के सर्पीले फन को कुचलने के लिए, भ्रम के घटाटोप बादलों को हटाने के लिए, जिससे कि पुनः तुम्हारी आंखें अपने प्यार को, अपने ब्रह्म को, अपने गुरु को, जी भर कर देख सकें, आंखों के रास्ते से अपने हृदय में उतार सकें, और अपनी विरहण आंखों को सुख, तृप्ति और आनन्द का दुलार दे सकें ।

— ● —

(३)

रिमझिम-रिमझिम बुंदियां बरसत

- हर क्षण मेरी आँखों के सामने आपकी ही छबि बनी रहती है, सोचता हूं भाग जाऊं जंगलों में, और आपको पूर्ण रूप से प्राप्त करने के लिये तपस्या करूं, पर रास्ता नहीं सूझता आपको पाने का, कोई सरल सा रास्ता बताइये न !
- तुम दुखी हो परेशान हो और इस व्यथा से, इस परेशानी से इस दुःख से बचने के लिए पहाड़ों की ओर भाग रहे हो, गंगा में डुबकी लगाने की तैयारी कर रहे हो, जंगल में पशुओं की तरह भटकने के लिए दौड़ रहे हो ।
- पर यह गलत रास्ता है, जिस पगड़ंडी पर तुम बढ़ने की कोशिश कर रहे हो वह गलत है, यह पगड़ंडी तुम्हें अंवेरी खोह में उलझा देगी यह रास्ता तुम्हें वियावान जंगलों में भटकने के लिए एकाकी छोड़ देगा, और तुम तड़फ़-तड़फ़ कर जान दे दोगे, पर प्राप्त कुछ नहीं कर पाओगे ।
- क्योंकि पहाड़ों की तरफ भागना, नदियों में मछलियों की तरह डुबकी लगाना व्यर्थ है, वेमानी है, अपने आपको छलना है, खुद को धोखा देना है, क्योंकि यह रास्ता ही तुमने गलत चुन लिया है ।
- क्योंकि जहां तुम शांति की खोज कर रहे हो वह छलावा है, धोखा है, एक सपना है, और जब यह सपना टूट जायगा, तो तुम खुद भी उसके साथ ही साथ टूट जाओगे, बिखर जाओगे, चकनाचूर हो जाओगे ।
- तुम्हें लंगोटी लगा कर जंगल की ओर नहीं भागना है, भगवे कपड़े पहिन कर मन पर सौ-सौ पद्दें नहीं ढालने हैं, आँखें बंद कर ठूंठ नहीं बन जाना है ।
- अपितु सही रास्ता तो यह है कि तुम मेरे पास आओ, मेरे स्नेह की वर्षा में अपने आपको भीगने दो, मेरे प्यार की फुहार में अपने आपको तरंगित होने दो, मेरा स्पर्श कर शरीर को पुलकित होने दो, तब तुम्हें आनन्द की अनुभूति होगी, तब तुम्हारे अन्दर प्रेम का अंकुर फूटेगा, तब तुम्हारा शरीर मेरी सुंगंध से सुवासित हो सकेगा और तब तुम सही अर्थों में धन्य हो सकोगे, सही अर्थों में प्रेममय हो सकोगे, सही अर्थों में रसमय हो कर आनन्द से सराबोर हो सकोगे ।
- एक बार देख तो लो, प्रयत्न करके ही सही ।

— ● —

(४)

जल बिच मीन पियासी

- मेरे जीवन में सब कुछ होते हुए भी मुझे खाली-खाली सा लग रहा है, जैसे कि मैं पुराँ-पुराँ की प्यासी हूं, बेचैन हूं, परेशान हूं…… क्या करूं मेरे गुरुदेव ! यह प्यास कैसे मिट सकती है ?
- कवीर ने सही कहा है कि अथाह समुद्र में भी मछली प्यास से बेचैन है, तृष्णित है, प्यासी है ।
 - और तुम भी इस दुःख के सागर में, गृहस्थ की इन परेशानियों के समुद्र में, मछलों की तरह प्यासी हो, क्योंकि तुम्हें पता ही नहीं है, कि मीठे पानी का स्रोत कहां है, जहां प्यास बुझाई जा सके, अमृत की मधुर धारा किस ओर बह रही है, जहां तुम्हारी प्यास बुझ सके ।
 - और इसके लिए तुम्हें गुरु के पास आना होगा, क्योंकि इस अथाह दुःख के समुद्र में वही एक मधुर धारा है, जहां प्यास बुझाई जा सकती है, वही एक कलकल करता हुआ भरना है, जहां हृदय को तृप्ति किया जा सकता है ।
 - और यह तृप्ति तो तुम्हारे पास ही है, अमृत की फुहार तो तुम्हारे पास ही बरस रही है, और तुम उस खारे नमकीन संसार के समुद्र की ओर भाग रही हो, अमृत का भरना तो बिल्कुल तुम्हारे पास कलकल करता हुआ बह रहा है, और तुम अपने दुःख, परेशानियों और संताप से सराबोर गृहस्थ के समुद्र में हिचकौले खा रही हो, और वह बेस्थाद, नमकीन खारा पानी तुम्हारी आँखों में, मुँह में और पेट में उतर रहा है, तुम्हें ऊबकाई आ रही है, आँखें खारे पानी से जल रही हैं, और तुम वहीं हाथ पैर मार रही हो ।
 - तुम मेरे पास आओ, अपने गुरु के पास, अपने आत्मीय के पास, अपने स्वजन और जीवन की धड़कन के पास, ज्ञान के मीठे कलकल करते हुए भरने के पास, आनन्द की नृत्य करती हुई लहरों के पास ।
 - आं और तुम वह सब कुछ पा लोगी, जिसकी तुम्हें चाह है, ध्यान-धारणा साधना-सिद्धि, सुख-सौभाग्य, आनन्द और मस्ती की भीनी-भीनी फुहार …… सौभाग्य का लहराता हुआ सागर, और आनन्द से सराबोर गुरु का हृदय, और इससे ज्यादा तुम्हें चाहिए भी क्या ?

— ● —

(५)

करक कलेजे भाय

- गुरुवर ! आपके पास से जाने के बाद हर थणा, हर पल आपकी याद सताती रहती है, हूँक उठती रहती है हृदय में, ऐसा लगता है, कि जैसे कलेजे में कोई फांस चुभ गई हो इसके लिए क्या करूँ, प्रभु ?
- यह तुम्हारे कलेजे की कसक नहीं है, यह तो एक चेतना है, जो तुम्हें उठने के लिए, बढ़ने के लिए और पूर्ण रूप से एकाकार हो जाने के लिये प्रेरित कर रही है ।
- यह फांस तुम्हारे कलेजे में कोई पहली बार नहीं फंसी है, इससे पहले भी कई बार यह फांस चुभी होगी, कई बार तुम्हारे कलेजे में दर्द उठा होगा, और तुमने सुना-ग्रन्थनुना कर दिया होगा, कई बार तुम्हारे दिल में मिलने की हूँक उठी होगी, और तुमने कस कर उसे दबा दी होगी ।
- और यह कोई फांस इस जीवन की ही नहीं है, कई-कई जन्मों की फांस है, जो तुम्हारे कलेजे में गड़ी है, जो तुम्हें आगाह कर रही है, कि कहीं और चलना है, जो तुम्हें सावधान कर रही है कि यहीं नहीं रुक जाना है, मंजिल कहीं और है जहां तक जाना है, क्योंकि वहां जाने पर ही यह कसक मिट सकेगी, यह दर्द खत्म हो सकेगा, यह कलेजे में गड़ी हुई फांस निकल सकेगी ।
- और मैं तो काफी समय से आवाज दे रहा हूँ तुम्हें, निमंत्रण दे रहा हूँ तुम्हें, स्वीकृति दे रहा हूँ अपने पास आने की, आ कर मिलने की, मिल कर एकाकार हो जाने की, एकाकार हो कर समर्पण हो जाने की, और समर्पित हो कर अपने अस्तित्व को मिटा देने की ।
- मैं तो आवाज दे रहा हूँ युगों-युगों से तुम्हें, मैं तो बुला रहा हूँ जन्म-जन्म से तुम्हें, मैं तो निमंत्रण दे रहा हूँ, दोनों भुजाएं फैलाकर तुम्हें सीने से लगाने के लिये, वक्षस्थल में भीच लेने के लिये, दिल में पूरी तरह से उतार देने के लिये ।
- तभी तो तुम्हारे कलेजे की यह “करक” निकल सकेगी, तभी तो इस फांस से तुम्हें मुक्ति मिल सकेगी, तभी तो तुम सदगुरु को पा सकोगी जन्म-जन्म के लिये, युगों-युगों के लिये ।
- और तभी तुम पूर्ण बन सकोगी, आनंदित प्रफुल्लित, सुवासित ।

—●—

(६)

हे री ! मैं तो प्रेम दीवानी

- क्या प्रेम घटिया और तुच्छ है, क्या प्रेम करना ओछापन है, आखिर क्या है प्रेम ?
- तुम प्रेम-दीवानी हुई नहीं, होती तो फिर मुझे यह सब कहना ही नहीं पड़ता, यह कुछ भी नहीं बताना पड़ता ।
- क्योंकि सारे वेद, शास्त्र, उपनिषद, दर्शन और मीमांसा “प्रेम” पर ही तो आकर खत्म होते हैं, जिसने प्रेम ही जान लिया, उसके पास बाकी जानने के लिए रहा ही क्या है ?
- और तुमने अभी प्रेम करना सीखा ही कहां है, तुमने तो वासना को ही प्रेम समझ लिया है, हाड़-मांस को ही प्रेम की अभिव्यक्ति मान ली है ।
- प्रेम तो जीवन का सौन्दर्य है, सम्पूर्ण जीवन की जगमगाहट है, हृदय का नृत्य है, मन की प्रफुल्लित तरंगें और धरती की थरथराहट है ।
- और गुरु को ध्यान से या धारणा से नहीं पाया जा सकता, पालथी मार कर आंखें बन्द करके भी नहीं पाया जा सकता, आचमनी से जल उछाल कर, या शंख बजा कर भी उसे नहीं पाया जा सकता ।
- प्रेम में दीवानगी अभी आई नहीं तुममें, प्रेम राधा का देखो, जो बांसुरी की एक धुन पर बेतहासा दौड़ी चली जाती थी, हाँफतो हुई, बेसुध, अपने आप से बेखबर । प्रेम तो मछली का देखो, एक क्षण के लिए उसे समुद्र के जल से हटा कर तो देखो, तड़कर जान दे देगी, प्रेम कुरंगी का देखो, एक क्षण के लिए भी कुरंग आंखों से ओझल होता है तो कुरंगी पत्थर पर सिर पटक कर जान दे देती है ।
- अगर प्रेम में दीवानगी ही आ गई, तो फिर क्या दुनियां, क्या समाज, क्या लोग और क्या आलोचनाएं । दीवानगी तो प्रेम का प्रतिफल है, ईश्वर का श्रेष्ठतम वरदान है, और गुरु से “ब्रह्म से ईश्वर से एकाकार हो जाने की सफल सहज किया है ।
- और मैं कहता हूँ, तुममें और दीवानगी आये, और त्वरा आये, और तुम इसी जीवन में ब्रह्म से एकाकार हो सको ।

—●—

(७)



COLLECTION OF VARIOUS
→ HINDUISM SCRIPTURES
→ HINDU COMICS
→ AYURVEDA
→ MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server!

रसो वै सः ब्रह्म

- आपने अपने प्रबचनों में कहा है, कि गुरु के माध्यम से ब्रह्म से साक्षात्कार किया जा सकता है, कि सामाजिक वर्जनाओं के रहते नारी भी ऐसा सौभाग्य पा सकती है ?
- एक तो इस बात का ध्यान रखो कि साधना के पथ पर न तो कोई पुरुष होता है और न कोई स्त्री, वह एक सम्पूर्ण साधक होता है ।
- और फिर साधक की यात्रा शून्य से प्रारम्भ होकर 'ब्रह्म' तक पहुंचती है, क्योंकि उसका अन्तिम पड़ाव ब्रह्म है, ब्रह्म से साक्षात्कार है, ब्रह्म में विसर्जन है ।
- पर ब्रह्म को वेदों और शास्त्रों ने भी नहीं देखा, इस लिए गुरु के माध्यम से ही ब्रह्म तक की यात्रा सम्पन्न की जा सकती है, और जिसने गुरु को जान लिया, उसने ब्रह्म को जान लिया, जो गुरु से एकाकार हो गया, वह ब्रह्म से एकाकार हो गया, जो गुरु में विसर्जित हो गया, वह ब्रह्म में भी लीन हो गया ।
- और फिर तुमने शब्द 'छोड़ा' है 'सामाजिक वर्जनाओं' का, तो समाज कब किसी को बढ़ने देता है, कौश्रों का भुज बन चाहेगा, कि उनमें से कोई हंस हो जाय, कीचड़ की गंदगी कब चाहेगी कि उसमें कोई कमल खिल जाय, गुलामी में सांस लेने वाले कब चाहेंगे कि कोई ताजी हवा की सुवास से सुगंधित, मस्त और आनन्दित हो जाय ।
- और फिर समाज ने तुम्हें दिया ही क्या है, कुंठा, परेशानी, बाधाएं, अड़चनें, कठिनाइयां और गुलामी ।
- और जो समाज से दबता है, उसे समाज और दबाता है, जो समाज से भयभीत होता है, समाज उस पर और अधिक जुल्म करता है, और अधिक घेरे में कसता है, और अधिक सिकंजे में जकड़ता है ।
- राधा ने कब समाज की परवाह की, वषभानु ने उसे घर में कैद कर दिया तो क्या कृष्ण की बांसुरी सुनते ही यमुना किनारे दौड़ कर पहुंचने से रुकी, ललिता को दीवार में चुनने की तैयारी की, तो क्या वह कृष्ण से लिपटने से रुकी, मीरा को जहर का प्याला थमा दिया तो क्या उसने समाज की परवाह की, नदी के बहाव में बांध खड़े कर दिये, तो क्या उसे समुद्र से मिल जाने से कोई रोक सका ?
- यह तब होता है, जब हृदय में वेग होता है, तड़क होती है, मिलने की चाह होती है, समाज से बगावत करके अपने आप को स्थापित करने की क्षमता होती है ।
- और तुम्हें भी ब्रह्म से साक्षात्कार तक की मंजिल पार करने से कोई नहीं रोक सकता, होनी चाहिए तुम्हारे पैरों में ताकत, आंखों में चिनगारी और हृदय में बगावत ।

— ● —